

रेल दुर्घटनाएं यानी हादसों की पटरी

■ मुकेश भारद्वाज

वरिष्ठ पत्रकार

देश में रेल दुर्घटनाएं क्यों होती हैं, इसकी वजह किसी से छुपी नहीं। न तो सरकार से और न ही आम आदमी से। लेकिन इसकी पूरी जानकारी होने के बाद भी ये हादसे हर साल सैकड़ों लोगों को शिकार बना लेते हैं। जब भी कोई हादसा होता है, यह मुद्दा गरमा जाता है और बैठकों का एक सिलसिला शुरू होता है जो ऐसे मसलों पर गौर करने के लिए अगली बैठक तक के लिए स्थगित हो जाता है।

दरअसल रेल दुर्घटना का असर बाकी किसी भी हादसे से कई गुना ज्यादा होता है। इसका सीधा कारण यात्रियों की संख्या है। भारत में अंतर्देशीय परिवहन के लिए रेल सबसे बड़ा माध्यम है। दुनिया के सबसे बड़े रेल नेटवर्क में से एक भारत में हर रोज सवा दो करोड़ से भी ज्यादा यात्री सफर करते हैं जबकि 87 लाख टन के आसपास सामान ढोया जाता है। कुल

64,600 रूट के ट्रैक पर जरा सी गफलत लाखों लोगों की जान को जोखिम में डाल सकती है। ऐसे में इन पटरियों पर यात्रियों और इनके आसपास से गुजरने वालों की सुरक्षा पर खास ध्यान देने की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन यह हो नहीं पाता, और यही वजह है कि हर साल हादसों से दो-चार होना पड़ता है।

देश की रेल व्यवस्था की खास बात

रेलवे विभाग में होने वाले हादसों पर अब तक के मनन-मंथन के बाद यह पाया गया है कि 80 फीसद दुर्घटनाएं मानवीय चूक के कारण होती हैं। और इसका आधे से ज्यादा बड़ा हिस्सा मानवरहित क्रॉसिंग पर ही घटित होता है।

यह है कि पहले से पता खामियों को दूर किए बिना ही हर साल रेल नेटवर्क के विस्तार पर जोर होता है। राजनीतिक कारणों से नए स्टेशन बनाए जाते हैं। नई पटरियां घोषित की जाती हैं, नए कोच कारखाने लगाए जाते हैं, पुराने स्टेशनों का दर्जा बढ़ाया जाता है। रेल बजट में भी बढ़ोतरी होती है। लेकिन घाटा बरकरार रहता है। एक मुद्दा से रेल विभाग में पैसे का टोटा है। लेकिन जहां से पैसा आ सकता है, वहां से इकट्ठा करने के राजनीतिक जोखिम हैं। जाहिर है कि रेल बजट में किराए में बढ़ोतरी का कोई प्रस्ताव नहीं था।

रेलवे विभाग में होने वाले हादसों पर अब तक के मनन-मंथन के बाद यह पाया गया है कि 80 फीसद दुर्घटनाएं मानवीय चूक के कारण होती हैं। और इसका आधे से ज्यादा बड़ा हिस्सा मानवरहित क्रॉसिंग पर ही घटित होता है। सरकारी आंकड़ों पर नजर डालें तो 2011-12 में जो 115 रेल दुर्घटनाएं हुईं, उनमें से 87.78 फीसद मानवीय भूल के कारण हुईं। उनमें से भी 52 रेलवे



विभाग के कर्मचारियों और 63 दूसरे लोगों की गलती से हुई। लेकिन इसमें राहत की यही बात रही कि वैश्विक स्तर पर मान्य रेलवे सुरक्षा मानकों की कसौटी पर दुर्घटनाओं में कमी हुई और तालिका में यह कमी 0.15 से कम होकर 0.13 हो गई। लेकिन असल में यह राहत बड़ी मामूली है और इससे कोई प्रशस्ति हासिल करने की उम्मीद करना भी बड़ी भूल है। देश की रेलवे व्यवस्था में जो चीज दुर्घटनाओं का बायस बन रही है, वह है मानवरहित रेलवे फाटक। देश में दो वर्ष पहले तक 30 हजार से भी ज्यादा रेलवे क्रॉसिंग थे। उनमें 11563 मानवरहित और 18785 दूसरे रेलवे फाटक थे। करीब 40 फीसद हादसे इन फाटकों पर ही होते हैं। पिछले बजट में यह प्रावधान रखा गया था कि 3000 मानवरहित फाटक खत्म किए जाएंगे जबकि 917 ओवरब्रिज बनाए जाएंगे। लेकिन यह

आंकड़ा कभी भी पूरी कामयाबी से दर्ज नहीं होता और ज्यादातर पर काम साल पूरा होने तक भी अधूरा ही रहता है। भारतीय रेलवे के 'विजन 2020' में यह प्रण है कि मानवरहित फाटक पूरी तरह खत्म करने हैं।

लेकिन यह इतना आसान भी नहीं। लगभग हर साल ही सरकार ऐसी कसम खाती है और फिर व्यवस्था में ऐसी विषमता है कि यह कभी भी पूरी नहीं हो पाती। रेलवे की एक समीक्षा समिति ने 2012 में अपनी एक रिपोर्ट में पाया था कि हर साल 1500 लोग इन फाटकों पर अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। इनमें से ज्यादातर लोग इन्हें पार करने की जल्दी में अपने प्राण दे बैठते हैं। इन मौतों पर आरोप-प्रत्यारोप और कानूनी पेचीदगियां अपनी जगह, लेकिन यह तथ्य अपनी जगह कायम है कि देश की रेल व्यवस्था का यह एक ऐसा पहलू है

भारतीय रेलवे के 'विजन 2020' में यह प्रण है कि मानवरहित फाटक पूरी तरह खत्म करने हैं। लगभग हर साल सरकार ऐसी कसम खाती है और फिर व्यवस्था में ऐसी विषमता है कि यह कभी भी पूरी नहीं हो पाती।

जो चीज रेलवे को नुकसान पहुंचा रही है, वह है इसका राजनीतिकरण। सबसे ज्यादा सियासत इसी विभाग को लेकर होती है। कहना न होगा कि अगर केंद्र में त्रिशंकु सरकार है तो इस महकमे के लिए घटक दल सिर-धड़ की बाजी लगा देंगे। तारीख गवाह है कि इस महकमे के लिए कभी तृणमूल कांग्रेस तो कभी राष्ट्रीय जनता दल तो कभी शिवसेना ने सरकार की नाम में दम कर दिया।

जिस पर काबू पाकर इसे 'सामूहिक जनसंहार' के आरोप से तो एक हद तक बचाया जा ही सकता है। फिलहाल ऐसी योजना है कि 2017 तक 30,348 रेलवे क्रॉसिंग में से 10,797 को तो सिर से ही खत्म कर दिया जाए। यह फैसला भी किया जा चुका है कि कोई और नई क्रॉसिंग भविष्य में पटरियों पर न हो।

रेलवे फाटकों जैसा ही एक और भी घुन है जो विभाग को खोखला कर रहा है। महकमे में हर कदम पर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। हाल में खुद रेलमंत्री सुरेश प्रभु ने माना कि यहां भ्रष्टाचार का आलम है जिसे दूर किया जाएगा। यह भ्रष्टाचार ठेके आबंटित करने से लेकर ई-टिकट और आरक्षण तक फैला हुआ है। पिछले कुछ सालों में इस भ्रष्टाचार में दिनोंदिन बढ़ोतरी ही हुई है।

इसके अलावा जो चीज रेलवे को नुकसान पहुंचा रही है, वह है इसका राजनीतिकरण। सबसे ज्यादा सियासत इसी विभाग को लेकर होती है। कहना न होगा कि अगर केंद्र में त्रिशंकु सरकार है तो इस महकमे के लिए घटक दल सिर-धड़ की बाजी लगा देंगे। तारीख गवाह है कि इस महकमे के लिए कभी तृणमूल कांग्रेस तो कभी राष्ट्रीय जनता दल तो कभी शिवसेना ने सरकार की नाम में दम कर दिया। अब केंद्र में स्पष्ट बहुमत से बनी भाजपा सरकार में तो खैर ऐसे किसी बाहरी दबाव की स्थिति ही नहीं है। इसके बावजूद विभाग में कभी कोई ऐसा बड़ा सुधार देखने को नहीं मिला है। इस सरकार के पास न तो अपने बहुमत और न ही इच्छाशक्ति की कमी है, लिहाजा यह कार्यकाल रेलवे के लिए खास हो सकता है। लेकिन कितना हो पाएगा, यह देखने की बात है।

हादसे रोकेगा इसरो का 'गगन'!

मानवरहित रेलवे क्रॉसिंग पर हादसे रोकने के लिए इसरो (इंडियन रिसर्च स्पेस ऑर्गेनाइजेशन) भी जुट गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, इसरो जल्द ही रेलवे के इंजनों में गगन (जीपीएस) नामक चिप लगाएगा, जो सेटेलाइट सिस्टम से जुड़े होंगे। रेल लाइन की ध्वनि से ही चिप को आगे मानवरहित क्रॉसिंग

का आभास हो जाएगा और हॉर्न बजने लगेगा। लगातार हॉर्न बजने पर लोग खुद ही अलर्ट होकर लाइन से हट जाएंगे।

मौत की क्रॉसिंग पर पिछला साल-

* 16 दिसंबर 2014 : बिहार के नवादा जिले में क्यूल-गया रेलखंड पर शफीगंज गांव के पास मानव रहित क्रॉसिंग पर गया-हावड़ा एक्सप्रेस ट्रेन की एक बोलरो जीप से टक्कर हो गई। इसमें 5 लोग मारे गए और 3 घायल हो गए।

* 7 फरवरी 2014 : उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले में मानवरहित रेलवे क्रॉसिंग पर संपर्क क्रांति एक्सप्रेस ने एक बुलेरो को टक्कर मार दी, जिसके कारण उसमें सवार सात लोगों की मौत हो गई। घटना रामपुर रेलवे स्टेशन के पास गोकुलनगरी रेलवे क्रॉसिंग की है।

* 19 मई 2014 : उत्तर प्रदेश सरकार में दर्जा प्राप्त मंत्री सतईराम यादव की कार को जौनपुर जिले में एक मानवरहित क्रॉसिंग पर ट्रेन ने टक्कर मार दी। हादसे में मंत्री की मौत हो गई।

* 24 जुलाई 2014 : तेलंगाना में मेडक जिले के चेगुंटा में मानवरहित रेलवे फाटक पर रेल और बस की टक्कर में बस चालक और स्कूली बच्चों सहित 18 लोगों की मौत हो गई। हादसे में 21 बच्चे घायल हुए थे।

* 19 अगस्त 2014 : बिहार के मोतीहारी में रेलवे क्रॉसिंग पर ट्रेन और ऑटो की टक्कर में 18 लोगों की मौत हो गई। मारे गए लोगों में 6 पुरुष, तीन महिलाएं और 9 बच्चे शामिल थे। घटना जिले में सुगौली-सेमरा रेलखंड पर सेमरा स्टेशन के पास हुई जब चिकनौता रेलवे क्रॉसिंग पर राप्ती-गंगा एक्सप्रेस ने सवारियों से लदे ऑटो को टक्कर मार दी। ऑटो में कुल 19 लोग सवार थे। मरने वालों में एक ही परिवार के 13 लोग थे।

* 4 दिसंबर 2014 : उत्तर प्रदेश के मऊ जिले में एक स्कूल वैन एक मानवरहित रेलवे क्रॉसिंग पर रेलगाड़ी की जद में आ गई, जिसमें पांच बच्चों की मौत हो गई। हादसे में 20 बच्चे घायल हो गए। ■